आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:14-08-14

हम भक्तों को आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर मास्टर ज्ञान सागर बनाने वाले बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - अभी तुम्हारी सब आशायें पूरी होती है, पेट भर जाता है, बाप आये हैं तुम्हें तृप्त आत्मा बनाने.

बाबा ने आज सारी मुरली में भक्ति और ज्ञान का अन्तर हम बच्चों को समझाया है. भक्ति में हम आधाकल्प जिसे पाने के लिए कहा-कहा भटकते थे, कई छोटी-मोटी अल्पकाल की आशायें पूरी हो जाये इसके लिए यात्राओं और मंदिरों के पीछे कितना खर्चा करते थे, कितना टाइम वेस्ट करते थे. वही ज्ञान सागर परमात्मा, अपने सहज ज्ञान से हमें आत्मा-अभिमानी बनाकर हमारी सर्व आशाओं को 21 जन्म के लिए पूर्ण कर देते है.

बाबा ने आज स्पष्ट कहा की सिर्फ ज्ञान लेने से हम आत्माये भक्त से ज्ञानी नहीं बनती लेकिन जब हम बाबा का ज्ञान स्वयं में धारण कर आत्मा-अभिमानी बनते है तब हम संपूर्ण ज्ञानी कहलाते है और संपूर्ण ज्ञानी आत्मा ही कर्मातित अवस्था को प्राप्त करती है.

आज बाबा ने हमें भक्ति और ज्ञान का अन्तर इस लिए समझाया की उसे धारण कर हमारी देही-अभिमानी अवस्था बने.

- भक्त लोग न खुद को जानते है, न ही भगवान को जानते है. तो जहॉ से कुछ अल्पकाल की प्राप्ति हुई, उसे ही भगवान समझकर उसकी भक्ति करने लग जाते है. परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने हम बच्चों को आत्मा और परमात्मा का सही ज्ञान दिया है. इसलिए अब हम समझते है वास्तव में भगवान तो एक ही निराकार को कहा जाता है. विश्व की सर्व आत्माये उसकी भक्त है, भगवान एक ही परमपिता-परमात्मा शिव है.

- भक्ति में हम शिव की पूजा बड़े लिंग के रूप में करते है लेकिन ज्ञान में बाबा ने हमें बताया की जैसे हम आत्माये अति सूक्ष्म ज्योति स्टार है वैसे ही हम आत्माओं के पिता, परमपिता-परमात्मा भी अति सूक्ष्म ज्योति स्टार मिसल है.

- भक्ति में दिन-प्रतिदिन रावण का चित्र बड़ा ही बनाते है. अगर रावण भी मनुष्य होता तो जैसे मनुष्य छोटे बड़े होते है रावण का चित्र भी छोटा बड़ा होना चाहिए. लेकिन नहीं रावण को दिन-प्रतिदिन बड़ा ही बनाते जाते है. ज्ञान में बाबा ने हमें समझाया की रावण तो मनुष्य आत्मा में पड़े पांच विकारों को कहा जाता है. जो द्वापर से, जब हम आत्माये, देह-अभिमानी बनती है तब से लेकर बढ़ते ही जाते है और इसके प्रतीक रूप हम रावण को बड़ा ही बनाते जाते है. अब संगम पर मीठे बाबा ने आकर हमें ज्ञान दिया जिसे हम वापस देही-अभिमानी बन जाते है तो यह रावण (विकारों) का भी दहन यानी विनाश हो जाता है.

- द्वापर से भक्ति काल में सब मनुष्य आत्माये अपने एक लौकिक बाप से वर्सा लेते है. लेकिन उस वर्से से आत्मा तृप्त नहीं होती यानी उससे आत्मा को संपूर्ण सुख-शांति की तृप्ति नहीं होती. अब संगम पर हम भाग्यशाली आत्माओं को बेहद के बाप से 21 जन्मो के लिए संपूर्ण सुख-शांति का वर्सा मिलता है. जिसे हमारी आत्मा बेहद के लिए तृप्त हो जाती है. 21 जन्मो के लिए कुछ भी मांगने से ही छूट जाते है.

- भक्ति मार्ग में समझते थे सुख या दुख सब ईश्वर ही देते है. कुछ भी हुआ तो समझते थे, ईश्वर की भावी. ज्ञान में बाबा ने हमें समझाया की ईश्वर कभी किसी को दुख नहीं देता. वह तो हम बच्चों के लिए 21 जन्म सुख और शांति का वर्सा देते है. फिर द्वापर से माया की भावी होती है तो मनुष्य आत्माये अपने कर्मों के आधार पर ही अल्पकाल के लिए सुख-दुख प्राप्त करते है.

- भक्ति में कितना दान-पुण्य करते थे ईश्वर के अर्थ. लेकिन इसे फायदा कुछ भी नहीं हुआ, फिर भी जन्म-जन्मांतर आत्मा की कला तो कम ही होती गई. बाबा के इस ज्ञान-यज्ञ में हम जो कुछ भी देते है उसका 21 जन्म के लिए हम आत्माये भाग्य बनाती है.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .